SAFALTA CLASS
An Initiative by अमरउजाला

Lesson name

Subject name by Akansha

SAFALTA CLASS
An Initiative by अमरउजाला

SAFALTA CLASS
An Initiative by अमर उजाला

Child Centred Education

(बाल केंद्रित शिक्षा)

- प्राचीन काल में शिक्षा का उद्देश्य केवल बालकों को ज्ञान याद कराना होता था। लेकिन आधुनिक शिक्षा में बालक को केंद्र मानकर योजना बनाई जाती है। वर्तमान में बालक के संपूर्ण विकास पर बल दिया जाता है।
- संपूर्ण विकास में बच्चे का शारीरिक, सामाजिक तथा मानसिक विकास आदि सभी पक्ष आते हैं। अतः शिक्षक को शिक्षा मनोविज्ञान का ज्ञान होना अत्यंत आवश्यक है।
- इस व्यवस्था में प्रत्येक बालक की और अलग से ध्यान दिया जाता है पिछड़े और मंद बुद्धि वाले बालकों के लिए अलग अलग पाठ्यक्रम की व्यवस्था की गई है।

SAFALTA CLASS
An Initiative by अमर उजाला

- बाल केंद्रित शिक्षा में शिक्षा का केंद्र बिंदु बालक होता है।
- बाल केंद्रित शिक्षा में बालक की मनोविज्ञान के अनुरूप शिक्षण व्यवस्था की जाती है।
- इसका उद्देश्य अधिगम संबंधी कठिनाइयों को दूर करना है।
- इसमें सीखने की प्रक्रिया के केंद्र में बालक होता है।
- बाल केंद्रित शिक्षा में बालक की शारीरिक और मानसिक योग्यता के विकास पर अध्ययन किया जाता है।
- इसमें बच्चों की समस्या को दूर करने के लिए निदानात्मक और उपचारात्मक शिक्षण किया जाता है।
- वैयक्तिक भिन्नता पर बल दिया जाता है।

SAFALTA CLASS
An Initiative by अमर उजाला

1 बालक को या शिक्षार्थियों को लक्ष्य पर बनाई गई शिक्षा नीति को बाल केंद्रित शिक्षा कहते हैं।

2 शिक्षार्थियों के सीखने का चरण, शिक्षण कार्य में आने वाली बाधाएं, सीखने का वक्र तथा प्रशिक्षण आदि कारकों को शामिल किया जाता है।

3 यह प्रयोग वादी विचारधारा पर आधारित है।

बाल केंद्रित शिक्षण के सिद्धांत (Principles of Child-Centered Learning)

1 क्रियाशीलता का सिद्धांत

2 प्रेरणा का सिद्धांत

3 उद्देश्य पूर्ण शिक्षा का सिद्धांत

4 रुचि का सिद्धांत

5 विभाजन का सिद्धांत

बाल केंद्रित शिक्षा की विशेषताएं (Characteristics of Child-centered Education)

1 बालको का ज्ञान (knowledge of children)

अध्यापकों को सफल होने के लिए बाल मनोविज्ञान का ज्ञान आवश्यक होना चाहिए। इसके अभाव में भी बालकों की विशेषताओं को नहीं समझ पाएंगे शिक्षक को बालक को के व्यवहार आवाज, मान, रूप योगिताओं तथा व्यक्तित्व का ज्ञान होना चाहिए।

2 शिक्षण विधि (Teaching method)

बाल मनोविज्ञान से अध्यापक को उपयोगी शिक्षण विधि आ सकती है। उसे पता चलता है कि किस प्रकार के बालक को कैसे किस विधि से पढ़ाया जाए बालकों को नैतिक कहानियों, नाटकों के द्वारा शिक्षा दी जानी चाहिए, उनके जीवन से जुड़े उदाहरण देनी चाहिए। पाठ्यक्रम को हिस्से में पढ़ाना चाहिए।

SAFALTA CLASS
An Initiative by अमर उजाला

3 पाठ्यक्रम (Curriculum)

पाठ्यक्रम को बनाते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि विद्यार्थी व समाज कि क्या आवश्यकताएं होती है ।पाठ्यक्रम और विज्ञान पर आधारित है लचीला होना चाहिए बालकों की रूचि के हिसाब से होना चाहिए,तथा व्यक्तिगत विभिन्नताओं के आधार पर होना चाहिए। इसके साथ ही शैक्षणिक उद्देश्यों को पूरा करने वाला भी होना चाहिए।

SAFALTA CLASS
An Initiative by अमर उजाला

SAFALTA CLASS
An Initiative by अमर उजाला

4 मूल्यांकन और परीक्षण (Evaluation and testing)

मूल्यांकन से बालक की उन्नति का पता चलता है शिक्षक और शिक्षार्थी बार-बार जानना चाहते हैं, कि उन्होंने कितनी प्रगति की है उन्हें सफलता या सफलता मिली है। तो क्यों और उसमें क्या परिवर्तन किए जा सकते हैं।सभी प्रकार की मूल्यांकन विधियां मनोवैज्ञानिक तथ्य पर आधारित होती है।

5 बाल केंद्रित शिक्षा के अंतर्गत कक्षा में अनुशासन एवं व्यवस्था बनाए रखने के लिए बाल मनोविज्ञान का सहारा लिया जाता है उदाहरण के लिए शरारती बालक ओं के अच्छे गुणों को पता लगाकर उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिए।

SAFALTA CLASS
An Initiative by अमर उजाला

SAFALTA CLASS
An Initiative by अमर उजाला

बाल केंद्रित शिक्षा के अंतर्गत पाठ्यक्रम का स्वरूप

(1) पाठ्यक्रम पूर्व ज्ञान पर आधारित होना चाहिए

(2) रुचि के अनुसार

(3) जीवन से संबंधित

(4) राष्ट्रीयता की भावना उत्पन्न करने वाला

(5) सामाजिक आवश्यकता के अनुसार

(6) मानसिक स्तर का

(7) व्यक्तिगत विभिन्नता के अनुसार

SAFALTA CLASS
An Initiative by अमर उजाला

SAFALTA CLASS
An Initiative by अमर उजाला

प्रगतिशील शिक्षा (Prograssive Education)

प्रगतिशील शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य बालक की योग्यताओं का विकास करना है।

प्रगतिशील शिक्षा के विकास में **जॉन डीवी** का विशेष योगदान है। प्रगतिशील शिक्षा यह बताती है कि शिक्षा से बालक के लिए है बालक शिक्षा के लिए नहीं इसीलिए शिक्षा का उद्देश्य ऐसा वातावरण तैयार करना होना चाहिए। जिसमें प्रत्येक बालक की प्रगति तथा विकास हो सके।

इस क्षेत्र में अमेरिकी वैज्ञानिक **जॉन डीवी** का विशेष योगदान रहा है।जॉन डीवी के अनुसार प्रगतिशील शिक्षा के संबंध में कुछ महत्वपूर्ण तथ्य इस प्रकार है।

SAFALTA CLASS
An Initiative by अमर उजाला

SAFALTA CLASS
An Initiative by अमर उजाला

- ऐसी शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य बालक की शक्तियों का विकास करना होता है।
- शिक्षा बालक के लिए ना कि बालक शिक्षा के लिए होता है।
- शिक्षण विधि को अधिक व्यवहारिक करने पर बल देना।
- शिक्षा" रुचि" और" प्रयास" पर आधारित हो।
- शिक्षक समाज का सेवक है।
- शिक्षा को अनिवार्य और सार्वभौमिक बनाने पर जोर।
- बालक की शिक्षा के लिए ऐसा परिवेश तैयार करना जिसमें बालक का सामाजिक विकास हो सके।
- बालक को विकास करने के लिए सामाजिक परिवेश उपलब्ध कराना।

SAFALTA CLASS
An Initiative by अमर उजाला

SAFALTA CLASS
An Initiative by अमर उजाला

प्रगतिशील शिक्षा की विशेषताएं (Features of progressive education)

1 बालक को स्वयं करके सीखने पर बल देना चाहिए।

2 बालक को स्वयं कार्यक्रम बनाने का मौका देना चाहिए।

3 समस्या समाधान और महत्वपूर्ण सोच पर जोर देना चाहिए।

4 रटन विद्या का विरोध।

5 सहयोगी और सहकारी शिक्षण परियोजनाओं पर बल देना।

6 व्यक्तिगत विभिन्नताओं के आधार पर शिक्षा का निर्माण।

7 स्कूलों में पाठ्यक्रम प्रतिबिंबित होना चाहिए।

SAFALTA CLASS
An Initiative by अमर उजाला

SAFALTA CLASS
An Initiative by अमर उजाला

8 शिक्षण विधि बच्चों की शक्तियों पर केंद्रित होनी चाहिए।

9 प्रगतिशील शिक्षा एग्जाम तथा मार्क्स पर जोर नहीं देती है।

10 प्रगतिशील शिक्षा कहती है कि शिक्षा ऐसी है जो बच्चों को उसके भविष्य में काम आए।

11 समूह में कार्य करके एक्टिविटीज के द्वारा सीखना।

शिक्षार्थियों का सहयोग

- मार्गदर्शक
- निर्देशक
- परामर्श
- सुविधा प्रदाता
- सर्वांगीण विकास करना

SAFALTA CLASS
An Initiative by अमर उजाला